waive the loans. Sir, it must be on record. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Fine. ...*(Interruptions)*... Now, Zero Hour submissions. Shrimati Viplove Thakur.

MATTERS RAISED WITH PERMISSION

Ill treatment and abuse of girls brought for marriage in certain States with low female ratio

श्रीमती विप्लव ठाकुर (हिमाचल प्रदेश): माननीय उपसभापति जी, मैं आपके ध्यान में एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय लाने जा रही हूं। यह एक ऐसी समस्या है, जिसमें महिला वर्ग का उत्पीड़न हो रहा है और इसे इस तरह से बर्बाद किया जा रहा है, जिसका उदाहरण आपको कहीं नहीं मिलेगा। हरियाणा जैसी स्टेट में girls की रेश्यो बहुत कम हो गई है, क्योंकि वहां सोसाइटी ऐसी है। वहां पर शादी के लिए लड़कियां नहीं मिल रही हैं, इसलिए वहां लड़कियां बाहर से जैसे बंग्लादेश से व ओडिशा से लाई जाती हैं। यहां तक कुछ साल पहले हिमाचल प्रदेश से भी लाई जाती थीं, लेकिन हमारे प्रदेश की सरकार ने और हम लोगों ने इस प्रकार के प्रयास पर रोक लगाई। आज भी बंगाल से, वैस्ट बंगाल से शादी के लिए जो लड़कियां वहां लाई जाती हैं, तो इस शादी में जिस लड़की से शादी की जाती है, उसे मौलीका पत्नी कहा जाता है और इस शादी को मौलीका शादी कहा जाता है। शादी कराने के बाद इन लड़कियों के साथ बहुत बुरा ट्रीटमेंट होता है। उनको मारा-पीटा जाता है। एक भाई शादी करता है, उसके चार-चार भाई उससे संबंध बनाते हैं। इस बारे में कुछ भी नहीं किया जा रहा है। आज हम NRI से शादी करने वाली लड़कियों के लिए तो कानून बना रहे हैं, लेकिन इन लड़कियों के लिए कुछ नहीं किया जा रहा है। मैं सरकार से यह अनुरोध करती हूं कि वह पता लगाए कि ये जो लड़कियां बाहर से आती हैं, क्या गरीबी की वजह से बेची जाती हैं या कोई मिडलमैन है, जो उनको बहला-फुसला कर लाता है और नए-नए सपने दिखाता है कि तुम्हारी शादी की जाएगी। एक उदाहरण आया है, लेकिन मैं यहां उन लड़की का नाम नहीं लेना चाहती हूं, क्योंकि न जाने उसके साथ क्या हो जाए। उसको अपनी जान का खतरा है। उसको मारा गया, तो वह भागकर एक स्कूल के अंदर शेल्टर लेने गई। उसके पूरे जिस्म पर मारने के निशान पड़े हुए हैं, लेकिन जब उससे कहा गया कि पुलिस में रिपोर्ट लिखाओ, तो वह डर गई और कहने लगी कि मेरा यहां कोई नहीं है। उसने कहा कि मुझे यहां पर बचाने वाला कोई नहीं है। मेरे मां-बाप बहुत दूर रहते हैं।

मेरा सरकार से यह अनुरोध है कि इस बारे में उसे गंभीरता से सोचना चाहिए। हम औरतें कोई कमोडिटीज़ नहीं हैं, हम जीती-जागती मूरतें हैं और हमारे अंदर जान है। हमारा अपना एक सम्मान है और हमारे अंदर एक सोचने की शक्ति है, लेकिन गरीबी ने उस सोचने की शक्ति को भी खत्म कर दिया है। उनके मां-बाप ने उनको बेच दिया है। यह भी एक तरह की ट्रैफिकिंग है, इसलिए मैं गृह मंत्रालय से भी अनुरोध करूंगी कि इसके बारे में गौर किया जाए। आपने मुझे बोलने का मौका दिया, इसलिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री अली अनवर अंसारी (बिहार): महोदय, माननीय सदस्या ने जो विषय उठाया है, मैं अपने आपको इससे संबद्ध करता हूँ।

श्री शमशेर सिंह ढुलो (पंजाब): महोदय, माननीय सदस्या ने जो विषय उठाया है, मैं भी अपने आपको इससे संबद्ध करता हूँ।

श्री रणविजय सिंह जूदेव (छत्तीसगढ़): महोदय, माननीय सदस्या ने जो विषय उठाया है, मैं भी अपने आपको इससे संबद्ध करता हूँ।

SHRI ANAND SHARMA (Himachal Pradesh): Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member.

SHRIMATI JAYA BACHCHAN (Uttar Pradesh): Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member.

SHRIMATI KAHKASHAN PERWEEN (Bihar): Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member.

DR. NARENDRA JADHAV (Nominated): Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member.

SHRI K.T.S. TULSI (Nominated): Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member.

SHRI SWAPAN DASGUPTA (Nominated): Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member.

SHRI AHAMED HASSAN (West Bengal): Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member.

SOME HON. MEMBERS: Sir, we also associate ourselves with the issue raised by the hon. Member.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Time over. All are supporting. Naqviji, youtake a note of this. It is a serious issue. Now, Dr. Sanjay Sinh.

Need to tackle the problem of floods in the State of Assam

डा. संजय सिंह (असम): माननीय उपसभापति महोदय, वैसे तो इस समय उत्तर भारत के कई राज्य बाढ़ का सामना कर रहे हैं, लेकिन असम में ब्रह्मपुत्र का जल स्तर बढ़ने के कारण उसके कई जिलों में बहुत बुरी तरह से तबाही हुई। वहाँ पर बाढ़ की बहुत ज्यादा समस्या है। इस राज्य को हर साल जिस तरह बाढ़ का प्रकोप झेलना पड़ता है, वह व्यवस्थागत उदासीनता का ही त्रासद उदाहरण है। राज्य के तैंतीस में से चौबीस जिले बाढ़ की चपेट में हैं, करीब साढ़े चार सौ गांव डूब चुके हैं और